जनजातीय अखड़ा के दूसरे दिन परिचर्चा व काव्य पाठ, आदिवासी साहित्यकारों ने कहा

आदिवासी साहित्य अन्य साहित्यों का अग्रदूत

कार्यक्रम में मंच पर मौजूद विभिन्न क्षेत्रों से आये आदिवासी लेखक और साहित्यकार.

संवाददाता ▷ रांची

डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान व साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा 2019 में शनिवार को उत्तर-पूर्व और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय आदिवासी लेखक सम्मेलन, आदिवासी साहित्य और सामाजिक सांस्कृतिक संघर्ष की स्थिति पर चर्चा की गयी तथा काव्य पाठ हुआ. उदघाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने कहा कि आदिवासी इस धरती के प्रथम निवासी है. जब ये प्रथम निवासी है, तो उनका साहित्य भी प्रथम साहित्य और अन्य साहित्यों का अग्रदूत है. यह कहना गलत नहीं है कि सभी साहित्य आदिवासी साहित्य से उत्पन्न हुए है. साहित्य अकादमी, पूर्वी क्षेत्रीय बोर्ड के कन्वेनर सुबोध सरकार ने कहा कि शहर के लेखक आदिवासी लेखकों की नकल कर रहे है. शेक्सपीयर का ज्यादातर लेखन भी उनसे लिया गया. दुनिया की कोई भी भाषा छोटी या बड़ी नहीं होती. उसे बड़ा या छोटा हम बनाते है. टीआरआइ के निदेशक रणेंद्र कुमार ने कहा कि टीआरआइ जनजातीय राजवंशों पर काम करेगा. टीआरएल के पूर्व एचओडी डॉ केसी टुडू ने भी विचार रखे.

राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा में दूसरे दिन विभिन्न विद्वानों ने रखी अपनी राय

अपनी भाषा में साहित्य की रचना होना जरूरी तभी भाषाएं भी जीवित रहेंगी

उत्तर पूर्व और उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय आदिवासी लेखक सम्मेलन सत्र में दार्जीलिंग से आयी लिंबू जनजाति की सृजना सुब्बा ने कहा कि अपनी भाषा में साहित्य होगा, तो भाषाएं जीवित रहेंगी. जनार्दन गोंड ने कहा कि अंगरेजों के आने के बाद गोंड जनजाति का इतिहास गायब हुआ है, जबकि आइन-ए- अकबरी और जहांगीर नामा में इसकी चर्चा है. ये दस्तावेज अरबी- फारसी में है. छत्तीसगढ़ से आये उपन्यासकार संदीप बख्शी ने कहा कि आदिवासी क्षेत्रों में संवेदनशील, ईमानदार और सेवा के भाववाले सरकारी पदाधिकारी पदस्थ होने चाहिए.

शुरू से आदिवासियों को हाशिये पर रखा जा रहा है

सिती संगमा ने कहा कि मेघालय में गारो समुदाय की आबादी एक तिहाई है. पर, उनका साहित्य ज्यादा चर्चित नहीं रहा है. इसकी स्थिति दयनीय है. राहुल सिंह ने कहा कि आदिवासियों को हाशिये पर रखा जा रहा है. यह दुखद है कि रांची विवि के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में 25 सालों से शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति नहीं हुई है. इस दिशा में शीघ्र पहल करने की जरूरत है. कवि राजा पुनियानी ने कहा कि 'विकास' विस्थापन व पर्यावरण से जुड़ी समस्याएं लेकर आता है. मौके पर संजय कुमार तांती ने असम के आदिवासियों की बात रखी. इस अवसर पर मिथिलेश प्रियदर्शी, डॉ मिथिलेश कुमार और नितिशा खलखो ने भी संबोधित किया.

राष्ट्रीय जनजातीय अखरा• डॉ रामदयाल मुंडा जंयती पर टीआरआई में संस्कृति और भाषा का होगा आदान-प्रदान

राज्यपाल ने कहा- वनाधिकार व पेसा कानून का पालन कैसे हो रहा है देखने की जरूरत

पॉलिटिकल रिपोर्टर | रांची

बोलीं-एक व्यक्ति को तीन भाषा, हिंदी, अंग्रेजी और अपनी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान होना चाहिए

डॉ. रामदयाल मुंडा जंयती पर कल्याण विभाग ने टीआरआई में तीन दिवसीय राष्ट्रीय जनजातीय अखरा-2019 का आयोजित किया गया है। इस अखरा में 12 से अधिक राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोग हिस्सा ले रहे हैं। तीन दिन तक यहा रहकर एक दूसरे के कला, संस्कृति एवं भाषा का अदान-प्रदान करेंगे। कार्यक्रम का उदघाटन झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने किया। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही ऐतिहासिक क्षण है जब इस तरह का आयोजन रांची में हो रहा है। इस तरह के आयोजन हर राज्य में होना चाहिए। इससे देश में निवास करने वाले 10 करोड़ से आदिवासी एक दूसरे के करीब आएंगे।

उन्होंने कहा कि पहले हमारे जनजातीय समुदाय के लिपि नहीं होते थे। मगर हमारे विद्वानों ने अब लिपि खोज निकाला है। इसलिए प्रत्येक आदिवासी का यह दायित्व है कि वे अपने-अपने भाषा का अपनाएं। स्कूली शिक्षा अपनी भाषा में करें। एक व्यक्ति को तीन भाषा, हिंदी, अंग्रेजी एवं अपनी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान अवश्यक होना चाहिए। भाषा एवं संस्कृति से जुड़े रहने से न केवल वे अपनी मिट्टी से जुड़े रहेंगे बल्कि देश के विकास में अहम योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड पांचवी अनुसूची क्षेत्र है। यहां पर पेसा कानून लागू है। इसलिए यह देखना जरूरी है कि वनाधिकार कानून एवं पेसा पालन कैसे हो रहा है। हमारी आर्थिक एवं सामजिक व्यवस्थाएं कैसी है। यह भी देखना जरूरी है। उन्होंने कहा कि देश के आजादी के 70 वर्ष बाद भी जनजातियों का आपेक्षित विकास नहीं होना चिंता का विषय है। केंद्र एवं राज्य सरकारें बहुत सारे योजनाएं चला रहे हैं, इसका लाभ आदिवासियों को उठाना चाहिए।

शुक्रवार को कार्यक्रम का उद्घाटन करतीं राज्यपाल।

जनजातीय अखरा में पारंपरिक नृत्य करती असम की टीम।

समागम का फायदा आदिवासियों को मिलेगा : सुनील वर्णवाल

कार्यक्रम में विभागीय सचिव सुनील कुमार ने कहा कि इस कार्यक्रम में नॉर्थ ईस्ट के जनजातीय समुदाय सहित कई राज्यों के जनजातीय हिस्सा ले रहे हैं। सरकार का यह प्रयास है कि लोग एक दूसरे के भाषा-संस्कृति को समझे। इस तीन दिवसीय समागम का फायदा आदिवासी उठाएंगे। कार्यक्रम में रांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो रमेश पांडेय, विनोद भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश शरण, डा श्याम प्रसाद मुखर्जी विश्यविद्यालय के कुलपति डा एस एन मुंडा, जनजातीय भाषा विभाग के एचओडी डा हरि उरांव, टीआरई के निर्देशक रणेंद्र कुमार सहित कई ने अपने-अपने विचार रखे।

12 से अधिक राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोग ले रहे हैं हिस्सा

राष्ट्रीय जनजातीय अखरा में झारखंड, अरूणाचल प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, असम, मेघालय, त्रिपुरा, उड़ीसा, मिजोरम, बंगाल सहित कई राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोग ले रहे हैं हिस्सा।

उत्तर पूर्व व पूर्वी क्षेत्रीय आदिवासी लेखक सम्मेलन आज

कार्यक्रम के पहले दिन शुक्रवार को आदिवासी साहित्य पर आदिवासी कविता, आदिवासी कहानी, आदिवासी उपान्यास, नाटक एवं अन्य विधाएं का आयोजन हुआ। जिसमें प्रमोद राणा, हरि राम मीणा, अनुज लुगुन, प्रेमी मोनिका तोपनो, सुषमा असुर, नितिशा खलखो, जित राय हांसदा, भोगला सोरेन, विनोद कुमरे, डा मिथिलेश, मिथिलेश प्रियदर्शी, प्रो एल खयांग्ते आदि ने हिस्सा लिया। इसके बाद आदिवासी पुरखा साहित्य, आदिवासी मातृ भाषाओं का साहित्य, आदिवासी साहित्य और इतिहास विषय पर गोष्ठी एवं अन्य कार्यक्रम हुआ। 24 अगस्त को उत्तर पूर्व एवं पूर्वी क्षेत्रीय आदिवासी लेखक सम्मेलन, भारतीय साहित्य का परिदृश्य और आदिवासी साहित्य स्थिति एवं संभावनाएं, आदिवासी साहित्य और सामाजिक-सांस्कृति संघर्ष की स्थितियां तथा काव्य पाठ का आयोजन होगा। इसी तरह 25 अगस्त को आदिवासी साहित्य और स्त्री जीवन का संघर्ष, आदिवासी साहित्य लेखन दशा, दिशा एवं चुनौतियां विषय पर कार्यक्रम होंगे।

डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान व साहित्य अकादमी का राष्ट्रीय जनजातीय अखरा शुरू

आदिवासी संस्कृति बचाना जरूरी : राज्यपाल

सांस्कृतिक चेतना के अग्रदूत थे डॉ मुंडा

जनजाति की जगह आदिवासी शब्द का हो प्रयोग

आदिवासी खुद को 'होड़' कहता है, जिसका अर्थ मनुष्य है

अखरा संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने पर जोर

डॉ रामदयाल मुंडा को आजसू ने दी श्रद्धांजलि

आदिवासी समाज के सच्चे हितैषी थे डॉ मुंडा

भाषा-साहित्य में रहा अमूल्य योगदान

सांस्कृतिक शोभायात्रा निकाली

डॉ रामदयाल को दी श्रद्धांजलि

केंद्रीय सरना समिति ने किया याद

राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा- 2019 का समापन, 30 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये

नया करने का लिया गया संकल्प

- 12-14 राज्यों से शामिल हुए आदिवासी लेखक और रचनाकार
- पाइका, जतरा और मुंडारी नृत्य की प्रस्तुति देकर बांधा समां

संवाददाता ▶ रांची

डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान व साहित्य अकादमी के तीन दिवसीय राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा- 2019 का समापन सोमवार को हुआ, जिसमें देश के 12-14 राज्यों से आये आदिवासी लेखकों और रचनाकारों ने अपनी कल्पना, चिंतन, आदिवासियों की उपलब्धियां और उनकी समस्याओं को साझा किया. एक-दूसरे के साथ संवाद किया और नये उत्साह से अपने-अपने क्षेत्र में और बेहतर करने का संकल्प दोहराया. समापन दिवस पर 'आदिवासी साहित्य और स्त्री जीवन के संघर्ष', 'आदिवासी साहित्य लेखन दशा, दिशा, वैविध्य और चुनौतियां', लघु कथा वाचन और काव्य पाठ के सत्र हुए. इस दौरान 30 शोध पत्र भी प्रस्तुत किये गये.

विस्थापन का सर्वाधिक दुष्प्रभाव महिलाओं पर : 'आदिवासी साहित्य और स्त्री जीवन के संघर्ष' सत्र में डॉ जैसन योरेन ने कहा कि आदिवासी समुदाय भूमिहीन, बेरोजगार और विस्थापित हो रहे हैं. इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव स्त्रियों पर होता है. सावित्री बड़ाइक ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र डायन प्रथा, नशा और शोषण के शिकार हैं. दमयंती सिंकू ने कहा कि विकास के नाम पर आदिवासी अपने गांव से दूर हो रहे हैं. बेला जयसवाल ने कहा कि आदिवासी साहित्य में स्त्री की वेदना, विरोध और संघर्ष भरा है. हेमन्त साह ने लोकगीतों के माध्यम से महिलाओं के सौंदर्य और उपस्थिति को रेखांकित किया. ज्योत्स्ना लिलियन खालखो ने कहा कि हमें नये पाठों से सीखने की जरूरत है, हम सभी अपने प्रश्नों का उत्तर ढूंढ पायेंगे.

अनुवाद जरूरी, ताकि ज्यादा लोगों तक पहुंचे : 'आदिवासी साहित्य लेखन दशा, दिशा, वैविध्य और चुनौतियां' सत्र में कर्नाटक से आये डॉ शांता नायक ने कहा कि हमें शब्दों के साथ खेलना होगा. आदिवासी साहित्य का अनुवाद होना चाहिए ताकि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंच सके. पंकज मित्र ने कहा कि आदिवासी दर्शन मूल रूप से जीवन के साथ सह अस्तित्व पर है. ...

राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा में झारखंड सहित करीब एक दर्जन राज्यों के आदिवासी लेखक शामिल हुए.

प्रेम जैसे विषयों से ज्यादा जरूरी मुद्दों पर लिखना

रांची. डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान और साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय जनजातीय अखड़ा 2019 में विभिन्न राज्यों से शामिल हुए आदिवासी रचनाकारों ने अपनी बातें साझा की. साथ ही विभिन्न मुद्दों पर अपनी बेबाक राय भी रखी.

लोगों के मुद्दों पर लिखना ज्यादा जरूरी है

मिजोरम की हन्ना लालनुनसांगी हैदराबाद विवि में अंग्रेजी में पीएचडी कर रही है. कविता की एक पुस्तक 'दैन ब्लैकबर्ड्स फ्लाई' लिखी है. उनकी कविताओं में मिजो विद्रोह और इतिहास की बातें होती हैं. उन्हें शिकायत है कि नॉर्थ ईस्ट के लेखकों को स्टीरियोटाइप समझा जाता है. जबकि वह भी हर तरह का लेखन करते हैं. व्यक्तिगत रूप से वह प्रेम जैसी संवेदनाओं से ज्यादा अपने लोगों के मुद्दे पर लिखना ज्यादा जरूरी समझती है.

पहचान और लैंगिक हिंसा है पसंदीदा विषय

अरुणाचल प्रदेश की नुगंग रीना जोरम्बू में इंटरनेशनल रिलेशन पर पीएचडी कर रही है. किशोरावस्था में लिखना शुरू किया कविताएं और कहानियां लिखती है. कई जगहों पर कविता पाठ किया है. पहचान, लैंगिक हिंसा और पितृ सत्तात्मक व्यवस्था उनके पसंदीदा विषय है. वह मानती है कि आम समझ के विपरीत यहां की जनजातियों में पितृ सत्तात्मक व्यवस्था काफी व्यापक है. वे भविष्य में उपन्यास और नॉन फिक्शन भी लिखना चाहती है.

दिनोंदिन समृद्ध हो रहा है पूर्वोत्तर का जनजातीय साहित्य

गुवाहाटी, असम से आये दिनकर कुमार ने लंबे समय तक सेंटीनल अखबार का संपादन किया है. असमिया की 60 किताबों का हिंदी में अनुवाद किया है और कविता की नौ किताब व दो उपन्यास भी लिखे हैं. वह कहते हैं कि पूर्वोत्तर का जनजातीय साहित्य काफी समृद्ध है. लेकिन मुख्यधारा की भाषाओं में अनुवाद नहीं होने के कारण ज्यादा चर्चा में नहीं है. बोडो, मणिपुरी के साथ साथ पनार, चकमा, कारबी, खासी, गारो में भी काफी ...

साहित्यकार प्रकृति के अनुरूप विचारधारा रखें

महाराष्ट्र के गौतम कुमार ने नंदुरबार जिला के भील व पावरा लोक साहित्य पर पीएचडी की है. वे कहते हैं कि आदिवासी साहित्यकारों को प्रकृति के अनुरूप विचारधारा रखनी चाहिए और लिखना चाहिए. तभी आदिवासियों की अस्मिता और उनका अस्तित्व सुरक्षित रहेगा. भीली जैसी कई भाषाएं हैं, जिन्हें बोलने वाली बड़ी आबादी है. उन्हें संवैधानिक दर्जा मिलना चाहिए. वह मानते हैं कि आदिवासी साहित्य तभी स्थापित होगा, जब आदिवासी साहित्यकारों ...

भाषाओं को बचाने का प्रयास अपने स्तर से शुरू करें

मध्य प्रदेश से आयीं वरिष्ठ आदिवासी लेखिका सुशीला धुर्वे ने हिंदी कहानी संग्रह 'बैन गंगा', 'मेरा गोंडवाना महान', 'जय गोंडवाना' और 'मोद बेड़पी' किताबें लिखी हैं. वे कहती हैं कि मूल भाषाएं विलुप्त हो रही हैं. आदिवासी समाज को उन्हें बचाने के लिए अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए. वह कहती हैं कि मध्य प्रदेश में रविवार को लोग जुटते हैं और गोंडी भाषा की पढ़ाई करायी जाती है. ओड़िशा में 300 शिक्षक गोंडी भाषा का प्रचार- प्रसार ...

जनजातीय अखरा : देशभर से जुटे साहित्यकारों ने सुनाई कहानी और कविता, बोले-

आदिवासी साहित्य में जिंदगी जीने की है सहजता

कल्चरल रिपोर्टर | रांची

आदिवासी साहित्य में पेड़-पौधे, नदी-नहर, जंगल-पहाड़ ही नहीं हैं, बल्कि जिंदगी जीने की सहजता है। प्रकृति प्रेम महज लेखन में ही नहीं व्यवहार में दिखता है। यह बातें डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय शोध संस्थान (टीआरआई) में तीन दिनों के विमर्श में उभरकर आईं। पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुंडा की जयंती पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय जनजातीय अखरा 2019 का आयोजन साहित्य अकादमी, राज्य पर्यटन विभाग के साथ मिलकर टीआरआई) ने किया था। सहयोग रुंबुल संस्था का भी रहा। आदिवासी साहित्य, संस्कृति, कला, शिल्प और नृत्य-संगीत के इस समागम में मेघालय, मिजारेम, आसाम, नागालैंड, त्रिपुरा, अरुणाचल, त्रिपुरा, सिक्कीम, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, केरल और झारखंड समेत कई राज्यों के विभिन्न भाषा में लेखन कर रहे सैकड़ों साहित्यकारों ने हिस्सा लिया। दिनभर कई सत्रों में रचना पाठ, शोध पत्र का वाचन और साहित्यिक विमर्श हुआ, तो शाम 6 बजे से रोज सांस्कृतिक महफिल सजती रही। जिसमें जनजातीय कलाकारों ने भाग लिया। इस दौरान क्राफ्ट, व्यंजन और पुस्तक प्रदर्शनी भी लगी। अंतिम दिन के तीसरे सत्र में मुंडारी कथाकार हेंसल सारो ने कहा कि उनकी कहानी में जंगल, पहाड़ और प्यार है।

टीआरआई में रविवार को राष्ट्रीय जनजातीय अखरा में हिस्सा लेते कई प्रांतों के साहित्यकार।

आदिवासी साहित्य में मुखर होने लगा है स्त्री संघर्ष

अंतिम दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली से आई डॉ. नीतिशा खलखो ने कहा कि अब आदिवासी साहित्य लेखन में स्त्री का जीवन संघर्ष दिखने लगा है। शहरी जिंदगी बदलाव ला रही है। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। हो शब्दकोष के लिए मशहूर दमयंती सिंकु ने कहा कि विकास के नाम पर हो रहे विस्थापन का दंश महिलाएं अधिक झेल रही हैं। बहस में श्वेता जायसवाल, मिलन रानी जमतिया और चैतन्य सोरेन आदि ने हिस्सा लिया।

डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय अखरा का दूसरा दिन, वैचारिक गोष्ठी व सांस्कृतिक कार्यक्रम हु

जनजातीय बोलियां चार भारतीय भाषाओं के परिवार का ही अंग: केसी टुडू

रांची | संवाददाता

भारतीय भाषा परिवारों में जनजातीय बोलियों का क्या स्थान है, यह मंथन करने की जरूरत है, जबकि चार भारतीय भाषा आर्य, द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाटिक, और नाग भाषा परिवार का ही अंग रही हैं जनजातियां बोलियां।

यह बात रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष केसी टुडू ने कही। वह शनिवार को मोरहाबादी स्थित डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान सभागार में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय अखरा कार्यक्रम के दूसरे दिन अतिथि के रूप में बोल रहे थे। तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन डॉ रामदयाल मुंडा की जयंती के अवसर पर किया गया है।

खास बातें

- आज 10 विश्वविद्यालयों में संथाली भाषा की स्नातकोत्तर में पढ़ाई हो रही है
- लोक साहित्य लोक जीवन में समाहित रहा है
- पहचान को बनाए रखने के लिए हुए हुए कई आंदोलन

रियासतों का विलय करना बड़ी बात नहीं : डॉ मिथलेश

डॉ मिथलेश ने कहा कि रियासतों का विलय करना बड़ी बात नहीं। सभी को साथ ले चलना बड़ी बात है। आज आदिवासी समाज सांस्कृतिक और आर्थिक साम्राज्यवाद जैसे खतरों से जूझ रहा है। जो खुद असभ्य हैं वे आदिवासी समाज को सभ्य बनाने की बात कहते हैं।

आदिवासी लेखक निरंतर लिखते रहें : डॉ राहुल

डॉ राहुल सिंह ने कहा कि आदिवासी लेखकों को अब निरंतर लिखते रहने की जरूरत है। क्योंकि उपन्यास विधा में आदिवासी लेखकों की संख्या कम है। उपन्यास-निबंध एक उर्वरक वाला इलाका है। इसलिए साहित्यक क्षेत्र में बने रहना है तो लिखिए।

आज पहचान बड़ा विषय बन गया है : पुनियानी

दार्जिलिंग से आए लेखक-कवि राजा पुनियानी ने कहा कि आज पहचान बड़ा विषय बन गया है। आज सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में पहचान पूछे जाते हैं। कहा दार्जिलिंग समेत देश के अन्य कोनों में भी परिचय का संकट उत्पन्न किया गया है।

डॉ टुडू ने कहा कि भाषा के संबंध में विकास हुआ है तो दो महत्वपूर्ण कार्य भी हुए हैं, विशेषकर आज 10 विश्वविद्यालयों में संथाली भाषा की स्नातकोत्तर में पढ़ाई हो रही है। कहा कि लोक साहित्य लोक जीवन में समाहित रहा है। जितने भी आंदो हुए चाहे वह बिरसा मुंडा, सिद्ध कान्हू आदि का हो, सभी पहचान बनाए रखने के लिए हुए। यह पहचान चाहे जमीन के रूप में हो भाषा के रूप में।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जर्नादन गौंड ने कहा कि ब्रिटिश शासन के बाद गौंड इतिहासों को गायब किया गया। जेएनयू के शोधार्थी मिथलेश प्रियदर्शी ने क कि उत्तर पूर्व के जनजातीय साहित्यकारों के साहित्य की पह सभी तक नहीं हो पाई है।

जनजातीय अखरा • टीआरआई में दूसरे दिन कई मुद्दों पर मंथन, एक्सपर्ट बोले

सोशल साइट तक सिमट गई है संवेदना

कल्चरल रिपोर्टर | रांची

पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुंडा के नाम पर बने जनजातीय शोध संस्थान में दो दिनों से उनकी जयंती के बहाने आदिवासी साहित्य, परंपरा, संस्कृति व इतिहास पर गहन विमर्श जारी है। राष्ट्रीय जनजातीय अखरा 2019 के नाम से इस तीन दिवसीय साहित्यिक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन साहित्य अकादमी के सहयोग से किया गया है। दूसरे दिन शनिवार को दार्जिलिंग से आए साहित्यकार राजा पुनियानी ने कहा कि अमेजन जैसा विश्व को 20 फीसदी ऑक्सीजन देने वाला जंगल जल रहा है। आदिवासी महिला चीत्कार रही है, लेकिन हम महज लाइक और शेयर कर अपना फर्ज निभा लिया समझ रहे हैं। संवेदना और क्रांति सभी सोशल साइट पर आकर सिमट गई है। हम सभी लोग जाति, धर्म में बंटे हैं। इंसान होना मजाक बनकर रह गया है। वो भारतीय साहित्य का परिदृश्य और आदिवासी साहित्य स्थिति व संभावनाएं विषय पर बोल रहे थे।

युवा आलोचक राहुल सिंह बोले कि पहले कहा करते थे, धरती बचेगी तभी आदिवासी बचेंगे। लेकिन आज कहना जरूरी है कि आदिवासी बचेंगे, तभी धरती बचेगी और साहित्य बचेगा। उन्होंने कहा कि दुनिया में आदिवासी से बढ़कर प्रकृति का मित्र और कोई नहीं हो सकता है। आदिवासी ही प्रकृति पूजा करते हैं और विश्वास रखते हैं। इस सत्र में डॉ. मिथिलेश सिंह, संजीव बक्शी, आइवी हांसदा आदि ने भी विचार साझा किए। आज के

आज समारोह में भाग लेंगे केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा

टीआरआई में कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

पहले सत्र में रांची विश्वविद्यालय जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. केसी टूडू बोले कि लोक साहित्य लोक जीवन में समाहित रहा है। सभी आंदोलन पहचान को बनाए रखने के लिए हुए। ईसाई मिशनरी के साथ आए लेखकों ने जनजातीय भाषाओं का व्याकरण तक लिखा। भाषा के संबंध में विकास हुआ है तो दो महत्वपूर्ण कार्य भी हुए है। विशेषकर आज 10 विश्वविद्यालयों में संथाली भाषा की स्नातकोत्तर में पढ़ाई हो रही है। सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक रणेंद्र कुमार ने की। स्वागत वक्तव्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने दिया। जबकि अतिथियों का परिचय सुबोध सरकार और कार्यक्रम परिचय असामी लेखक रोगबोंग तेरंग ने दिया। दूसरा दिन उत्तर पूर्व व पूर्वी क्षेत्रीय आदिवासी लेखन को समर्पित रहा। जिसमें लक्ष्मण बास्की, सिती संगमा, डॉ. गौतम कुमार, नीतिशा खलखो, सोनी तिरिया, पंकज मित्र, डॉ. महादेव टोप्पो समेत सैकड़ों लेखक-कवि शामिल हुए।